IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

जनपद उन्नाव में वर्ष 2001 से 2021 की अवधि में औद्योगिक विकास की प्रवृत्ति

शोधकर्ता

सुनील कुमार

भूगोल विभाग

वी. एस. एस. ड़ी. पी. जी. कॉलेज,

कानपुर, उत्तर प्रदेश

शोध निर्देशिका

डॉ. साधना रानी

(प्रोफेसर)

भूगोल विभाग

वी. एस. एस. ड़ी. पी. जी. कॉलेज,

कानपुर, उत्तर प्रदेश

शोध सारांश:

जनपद उन्नाव पारंपरिक रूप से एक कृषि प्रधान जिला रहा है, किन्तु 2001 और 2021 के बीच जनपद में व्यापक औद्योगीकरण हुआ है। यहाँ चमड़ा और कृषि आधारित उद्योगों का पर्याप्त विकास हुआ है। जनपद उत्तर प्रदेश राज्य के लखनऊ मण्डल में अवस्थित है। जनपद 26° 8' उत्तरी अक्षांश से 27° 2' उत्तरी अक्षांश और 80° 3' पूर्वी देशान्तर और 81° 3' पूर्वी देशान्तर के मध्य अवस्थित है। यह जनपद पश्चिम में गंगा नदी के तट पर अवस्थित है। जनपद में कुल 3083057 व्यक्ति, 1616613 पुरुष (52.44%) और 1466444 महिला (47.56%) हैं। इस शोध का उद्देश्य का अनुसंधान क्षेत्र जनपद उन्नाव में वर्ष 2001 से 2021 की अवधि में औद्योगिक विकास की प्रवृत्ति का अध्ययन करना है। यह शोधपत्र विवरणात्मक शोध विधि पर आधारित है। इस अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि जनपद में जहां कारखाना अधिनियम 1948 के अन्तर्गत पंजीकृत उद्योग और MSME अधिनियम के अंतर्गत पंजीकृत लघु उद्योग इकाइयों और उनमें कार्यरत कर्मचारियों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, वहीं इसके विपरीत खादी ग्रामोद्योग

इकाइयों का इस प्रकार से अपेक्षित विकास नहीं हो पाया है, जिसका मुख्य कारण सरकार द्वारा खादी ग्रामोद्योग इकाइयों की उपेक्षा करना है।

शब्द कुंजी: औद्योगिक विकास, औद्योगिकीकरण, पंजीकृत उद्योग, MSME उद्योग और खादी ग्रामोद्योग

शोध परिचय:

जनपद उन्नाव पारंपरिक रूप से एक कृषि प्रधान जिला रहा है, किन्तु 2001 और 2021 के बीच जनपद में व्यापक औद्योगिक परिवर्तन देखा गया है। 2001 से 2010 तक, जनपद में चमड़ा उद्योग एक प्रमुख क्षेत्र के रूप में उभरा, जिसमें कई चमड़े के कारखाने कच्चे माल का प्रसंस्करण करते थे। जनपद में इस अवधि में समवर्ती रूप से, कृषि आधारित विभिन्न लघु-स्तरीय उद्योग, मुख्य रूप से चावल और तेल मिलों का व्यापक विकास हुआ। इस दशक में जनपद के अंतर्गत सड़कों और परिवहन सुविधाओं सहित बुनियादी ढांचे का भी विकास शुरू हो गया, जिससे उभरते उद्योगों को बहुत व्यापक प्रोत्साहन मिला। इस अवधि में स्थानीय लोगों को इन उद्योगों से रोजगार मिलने लगा, जिससे धीरे-धीरे कृषि पर उनकी निर्भरता कम हो गई।

वर्ष 2011 से 2021 के दशक में, जनपद ने अपने औद्योगिक आधार में विविधीकरण का अनुभव किया। जबकि यहाँ चमड़ा उद्योग महत्वपूर्ण बना रहा, कपड़ा और हस्तशिल्प जैसे अन्य क्षेत्र फलने-फूलने लगे। समर्पित औद्योगिक क्षेत्रों और पार्कों की स्थापना के लिए सरकार के प्रयासों ने औद्योगिक गतिविधियों को और बढ़ावा दिया। हालाँकि, यह अवधि चुनौतियों से रहित नहीं थी। पर्यावरणीय मुद्दों, विशेष रूप से चमड़े के कारखानों से निकलने वाले अपशिष्ट के कारण गंगा नदी के प्रदूषण के कारण रुक-रुक कर शटडाउन होता रहा, जिससे हितधारकों के लिए आर्थिक चुनौतियाँ पैदा हुईं। इसके बावजूद, इस दशक में राजमार्ग और सड़क कनेक्टिविटी में सुधार हुआ, जिससे औद्योगिक विकास में वृद्धि हुई। इस सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों की ओर भी ध्यान देने योग्य झुकाव था, जो जनपद के औद्योगिक दृष्टिकोण में एक रणनीतिक बदलाव का संकेत देता है। इसी पृष्ठभूमि को दृष्टिगत रखते हुए शोधकर्ता द्वारा इस अध्याय में जनपद कानपुर में वर्ष 2001 से 2021 की अवधि में औद्योगिक विकास की प्रवृत्ति का अध्ययन किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र:

जनपद उत्तर प्रदेश राज्य के लखनऊ मण्डल में अवस्थित है। जनपद 26° 8' उत्तरी अक्षांश से 27° 2' उत्तरी अक्षांश और 80° 3' पूर्वी देशान्तर और 81° 3' पूर्वी देशान्तर के मध्य अवस्थित है। यह जनपद पश्चिम में गंगा नदी के तट पर अवस्थित है। जनपद का भौगोलिक क्षेत्रफल 4589.80 वर्ग किलोमीटर है, जो सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश के क्षेत्रफल का 1.53 प्रतिशत है। वर्तमान समय में जनपद को 6 तहसील उन्नाव, हसनगंज, सफीपुर, पुरवा, बीघापुर और बांगरमऊ और 16 विकासखंडों में विभाजित किया गया है। जनपद एक समतल मैदानी भाग है, जिसमें महान उच्चावचों का नितांत अभाव है, किंतु जनपद में बहने वाली प्रमुख नदियों गंगा और साईं ने इस मैदान को काट-छाँटकर विविधतायुक्त बना दिया है। इस विविधतायुक्त मैदानी भाग को मुख्य रूप से दो भागों में विभाजित किया जा सकता है यथा- तराई क्षेत्र और भाबर क्षेत्र। अध्ययन क्षेत्र में उपोष्ण कटिबंधीय मानसूनी जलवायु पाई जाती है, जिसमें मुख्य रूप से चार ऋतुएँ यथा- ग्रीष्म ऋतु, वर्षा ऋतु, शरद् ऋतु और शीत ऋतु देखने को मिलती हैं। जनपद में वर्ष 2011 के अंतर्गत ग्रामीण क्षेत्रों में 2576721 व्यक्ति, 1351897 पुरुष (52.47%) और 1224824 महिला (47.53%) हैं। वहीं नगरीय क्षेत्रों में 506336 व्यक्ति, 264716 पुरुष (52.28%) और 241620 महिला (47.72%) हैं। और जनपद में कुल 3083057 व्यक्ति, 1616613 पुरुष (52.44%) और 1466444 महिला (47.56%) हैं।

शोध उद्देश्य एवं प्रविधि:

इस शोध का उद्देश्य का अनुसंधान क्षेत्र जनपद उन्नाव में वर्ष 2001 से 2021 की अवधि में औद्योगिक विकास की प्रवृत्ति का अध्ययन करना है। यह शोधपत्र विवरणात्मक शोध विधि पर आधारित है, जिसके अंतर्गत शोधकर्ता द्वारा जनपद उन्नाव में चयनित अवधि में उद्योगीकरण की प्रवृत्ति के विभिन्न आयामों का विवरण प्रस्तुत किया गए है। इस शोध के अंतर्गत द्वितीयक आंकड़ों का उपयोग किया गया हैं, जिन्हें शोधकर्ता द्वारा जिला सांख्यिकी पत्रिका, जनपद उन्नाव से संकलित किया गया है। अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से इन आकड़ों को विभिन्न तालिकाओं और आरेखों के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है।

शोध परिमाण:

जनपद में मुख्य रूप से तीन प्रकार के उद्योग संचालित हैं, यथा- कारखाना अधिनियम 1948 के अन्तर्गत पंजीकृत उद्योग, MSME अधिनियम के अंतर्गत पंजीकृत लघु उद्योग और खादी ग्रामोद्योग। शोधकर्ता द्वारा यहाँ तीनों प्रकार के उद्योगों का विवेचन किया गया है। जनपद उन्नाव में कारखाना अधिनियम 1948 के अन्तर्गत पंजीकृत कारखानों की संख्या को तालिका के माध्यम से प्रदर्शित किया गया

है। इस तालिका के विश्लेषण से विदित होता है कि जनपद में वर्ष 2001 के अंतर्गत कुल 8 पंजीकृत उद्योग थे, जिनमें कुल 105 श्रमिक कार्यशील थे, इस वर्ष सबसे अधिक कारखानों की संख्या नवाबगंज में थी, जो 01 थी, और सबसे कम कारखानों की संख्या बाकी सभी विकासखंडों 0 थी। उसी वर्ष में सबसे अधिक कार्यरत व्यक्तियों की संख्या नवाबगंज में थी, जो 13 थी, और सबसे कम कार्यरत व्यक्तियों की संख्या बाकी सभी विकासखंडों में 0 थी।

जनपद में वर्ष 2011 के अंतर्गत कुल 65 पंजीकृत उद्योग थे, जिनमें कुल 3175 श्रमिक कार्यशील थे। जनपद में सबसे अधिक कारखानों की संख्या सिकंदरपुर करन में थी, जो 57 थी, और सबसे कम कारखानों की संख्या औरास में थी, जो 0 थी। वहीं, सबसे अधिक कार्यरत व्यक्तियों की संख्या सिकंदरपुर करन में थी, जो 658 थी, और सबसे कम कार्यरत व्यक्तियों की संख्या औरास में थी, जो 0 थी।

जनपद में वर्ष 2021 के अंतर्गत कुल 1121 पंजीकृत उद्योग थे, जिनमें कुल 7795 श्रमिक कार्यशील थे। वर्ष 2021 में सबसे अधिक कारखानों की संख्या सिकंदरपुर सरौसी में थी, जो 178 थी, और सबसे कम कारखानों की संख्या औरास में थी, जो 0 थी।

तालिका-1: जनपद उन्नाव में कारखाना अधिनियम 1948 के अन्तर्गत पंजीकृत कारखानों की संख्या, वर्ष 2001 से 2021

विकासखण्ड	2001		2011		2021	
	कारखानों की संख्या	कार्यरत व्यक्ति	कारखानों की संख्या	कार्यरत व्यक्ति	कारखानों की संख्या	कार्यरत व्यक्ति
गंज मुरादाबाद	0	0	1	3	107	413
बांगरमऊ	0	0	15	60	51	336
फतेहपुर चौरासी	0	0	2	6	22	306
सफीपुर	0	0	22	69	41	156
औरास	0	0	0	0	25	89
मियांगंज	0	0	3	10	28	84
हसनगंज	0	0	7	19	38	108
नवाबगंज	1	13	9	32	41	115
सिकंदरपुर सरौसी	0	0	4	12	178	1815
बिछिया	0	0	26	350	65	673
सिकंदरपुर करन	0	0	57	658	76	744
असोहा	0	0	4	15	38	112
हिलौली	0	0	12	34	32	119
पुरवा	0	0	37	148	33	112
बीघापुर	0	0	48	150	23	67
सुमेरपुर	0	0	24	67	25	68
योग ग्रामीण	1	13	271	1633	823	5317

योग नगरीय	7	92	383	1542	298	2478
योग जनपद	8	105	654	3175	1121	7795

स्रोत: जिला सांख्यिकी पत्रिका, वर्ष 2001, 2011 और 2021

आरेख-1

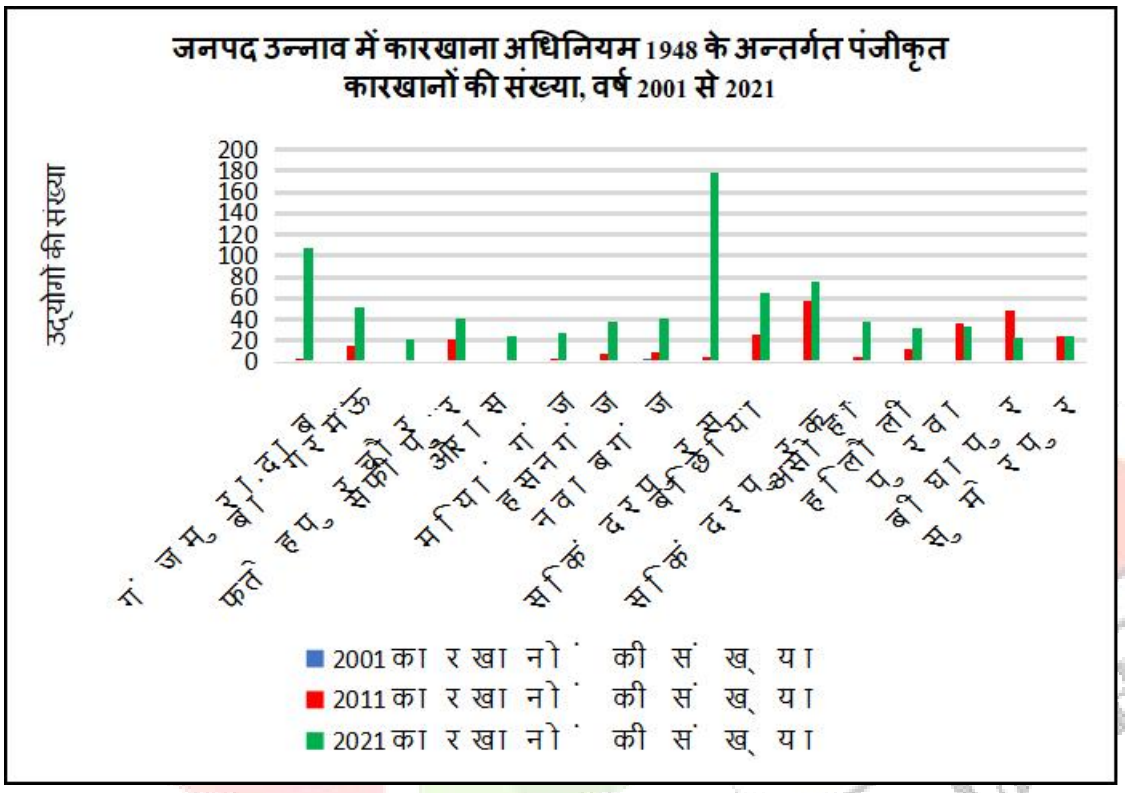

जनपद में वर्ष 2001 में MSME अधिनियम के अंतर्गत पंजीकृत लघु औद्योगिक इकाइयों की संख्या 60 थी, जिनमें कुल श्रमिक 281 कार्यशील थे। वर्ष 2001 में सबसे अधिक लघु औद्योगिक इकाइयों की संख्या बांगरमऊ में थी, जो 6 थी, और सबसे कम लघु औद्योगिक इकाइयों की संख्या गंज मुरादाबाद, औरास, मियांगंज, सिकंदरपुर सरौसी, सिकंदरपुर करन, असोहा, हिलौली, पुरवा और बीघापुर में थी, जो 0 थी। सबसे अधिक कार्यरत व्यक्तियों की संख्या सुमेरपुर में थी, जो 45 थी, और सबसे कम कार्यरत व्यक्तियों की संख्या गंज मुरादाबाद और औरास में थी, जो 0 थी।

जनपद में वर्ष 2011 में MSME अधिनियम के अंतर्गत पंजीकृत लघु औद्योगिक इकाइयों की संख्या 664 थी, जिनमें कुल 3175 श्रमिक कार्यशील थे। वर्ष 2011 में सबसे अधिक लघु औद्योगिक इकाइयों की संख्या सिकंदरपुर करन में थी, जो 57 थी, और सबसे कम लघु औद्योगिक इकाइयों की

संख्या औरास, मियांगंज, सिकंदरपुर सरौसी, असोहा, हिलौली, पुरवा और बीघापुर में थी, जो 0 थी। सबसे अधिक कार्यरत व्यक्तियों की संख्या सिकंदरपुर करन में थी, जो 658 थी, और सबसे कम कार्यरत व्यक्तियों की संख्या औरास में थी, जो 0 थी।

जनपद में वर्ष 2021 में MSME अधिनियम के अंतर्गत पंजीकृत लघु औद्योगिक इकाइयों की संख्या 1588 थी, जिनमें कुल 11660 श्रमिक कार्यशील थे। वर्ष 2021 में सबसे अधिक लघु औद्योगिक इकाइयों की संख्या बीघापुर में थी, जो 87 थी, और सबसे कम लघु औद्योगिक इकाइयों की संख्या औरास में थी, जो 57 थी। सबसे अधिक कार्यरत व्यक्तियों की संख्या असोहा में थी, जो 651 थी, और सबसे कम कार्यरत व्यक्तियों की संख्या गंज मुरादाबाद में थी, जो 365 थी।

तालिका-2: जनपद उन्नाव में MSME अधिनियम के अंतर्गत पंजीकृत लघु औद्योगिक इकाइयों की संख्या, वर्ष 2001 से 2021

विकासखण्ड	2001		2011		2021	
	कारखानों की संख्या	कार्यरत व्यक्ति	कारखानों की संख्या	कार्यरत व्यक्ति	कारखानों की संख्या	कार्यरत व्यक्ति
गंज मुरादाबाद	0	0	1	3	68	365
बांगरमऊ	6	28	15	60	60	452
फतेहपुर चौरासी	2	9	2	6	74	229
सफीपुर	4	15	22	69	65	548
औरास	0	0	0	0	57	325
मियांगंज	0	0	3	10	58	428
हसनगंज	2	9	7	19	88	512
नवाबगंज	4	18	9	32	66	339
सिकंदरपुर सरौसी	0	0	4	12	58	457
बिछिया	3	15	26	350	77	284
सिकंदरपुर करन	0	0	57	658	61	557
असोहा	0	0	4	15	79	651
हिलौली	0	0	12	34	63	529
पुरवा	0	0	37	148	62	554
बीघापुर	0	0	48	150	87	671
सुमेरपुर	9	45	24	67	81	461
योग ग्रामीण	30	139	271	1633	1104	7362
योग नगरीय	30	142	383	1542	484	4298
योग जनपद	60	281	654	3175	1588	11660

स्रोत: जिला सांख्यिकी पत्रिका, वर्ष 2001, 2011 और 2021

आरेख-2

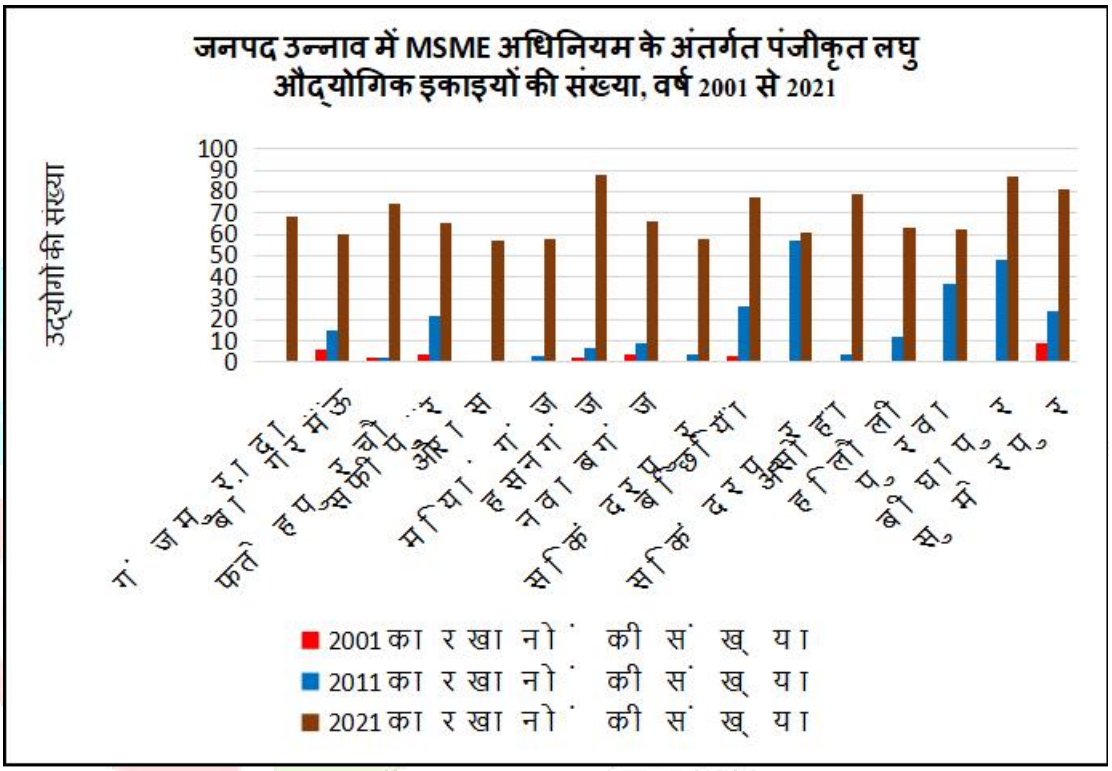

जनपद में वर्ष 2001 में ग्रामोद्योग इकाइयों की संख्या 55 थी, जिनमें कुल 165 श्रमिक कार्यशील थे। जनपद उन्नाव में पंजीकृत खादी ग्रामोद्योग इकाइयों की तालिका के अनुसार, वर्ष 2001 में सबसे अधिक खादी ग्रामोद्योग इकाइयों की संख्या सिकंदरपुर करन में थी, जो 15 थी, और सबसे कम खादी ग्रामोद्योग इकाइयों की संख्या कई स्थलों पर 0 थी। वर्ष 2001 में सबसे अधिक कार्यरत व्यक्तियों की संख्या सिकंदरपुर करन में थी, जो 216 थी, और सबसे कम कार्यरत व्यक्तियों की संख्या कई स्थलों पर 0 थी।

जनपद में वर्ष 2011 में ग्रामोद्योग इकाइयों की संख्या 80 थी, जिनमें कुल 1273 श्रमिक कार्यशील थे। वर्ष 2011 में सबसे अधिक खादी ग्रामोद्योग इकाइयों की संख्या सिकंदरपुर करन में थी, जो 15 थी, और सबसे कम खादी ग्रामोद्योग इकाइयों की संख्या फतेहपुर चौरासी में 0 थी। वर्ष 2011 में सबसे अधिक

कार्यरत व्यक्तियों की संख्या सिकंदरपुर करन में थी, जो 216 थी, और सबसे कम कार्यरत व्यक्तियों की संख्या फतेहपुर चौरासी में 0 थी। वर्ष 2021 में सबसे अधिक खादी ग्रामोद्योग इकाइयों की संख्या सिकंदरपुर सरौसी में थी, जो 14 थी, और सबसे कम खादी ग्रामोद्योग इकाइयों की संख्या असोहा में 0 थी।

जनपद में वर्ष 2021 में ग्रामोद्योग इकाइयों की संख्या 71 थी, जिनमें कुल 678 श्रमिक कार्यशील थे। वर्ष 2021 में सबसे अधिक कार्यरत व्यक्तियों की संख्या हसनगंज में थी, जो 138 थी, और सबसे कम कार्यरत व्यक्तियों की संख्या असोहा में 0 थी।

तालिका-3: जनपद उन्नाव में ग्रामोद्योग इकाइयों की संख्या, वर्ष 2001 से 2021

विकासखण्ड	2001		2011		2021	
	कारखानों की संख्या	कार्यरत व्यक्ति	कारखानों की संख्या	कार्यरत व्यक्ति	कारखानों की संख्या	कार्यरत व्यक्ति
गंज मुरादाबाद	0	0	1	20	1	4
बांगरमऊ	0	0	1	8	1	4
फतेहपुर चौरासी	0	0	0	0	4	16
सफीपुर	1	3	8	128	1	5
औरास	0	0	2	60	1	6
मियांगंज	0	0	11	185	9	89
हसनगंज	0	0	1	20	11	138
नवाबगंज	0	0	7	100	2	17
सिकंदरपुर सरौसी	0	0	8	144	14	181
बिछिया	0	0	3	52	5	44
सिकंदरपुर करन	0	0	15	216	8	68
असोहा	2	6	2	12	0	0
हिलौली	0	0	4	64	3	26
पुरवा	0	0	2	40	1	6
बीघापुर	1	3	8	112	5	46
सुमेरपुर	0	0	7	112	5	28
योग ग्रामीण	4	12	80	1273	71	678
योग नगरीय	51	153	0	0	0	0
योग जनपद	55	165	80	1273	71	678

स्रोत: जिला सांख्यिकी पत्रिका, वर्ष 2001, 2011 और 2021

आरेख-3

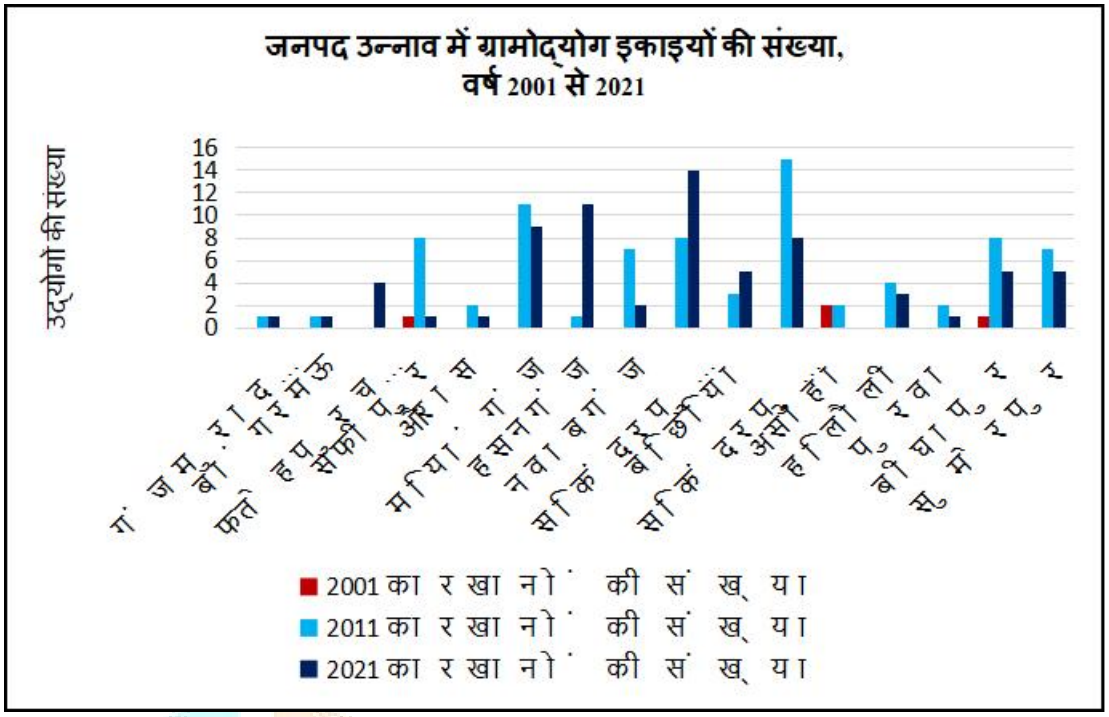

निष्कर्ष एवं सुझाव:

इस अध्ययन से विदित है कि जनपद में जहां कारखाना अधिनियम 1948 के अन्तर्गत पंजीकृत उद्योग और MSME अधिनियम के अंतर्गत पंजीकृत लघु उद्योग इकाइयों और उनमें कार्यरत कर्मचारियों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, वहीं इसके विपरीत खादी ग्रामोद्योग इकाइयों में संख्या में इस प्रकार की वृद्धि परिलक्षित नहीं होती है, जिसका मुख्य कारण सरकार द्वारा खादी ग्रामोद्योग इकाइयों की उपेक्षा करना है। सरकार द्वारा खादी ग्रामोद्योग इकाइयों को बढ़ावा देने के लिए पर्याप्त नीतियों और योजनाओं को लागू नहीं किया गया है। इसके अतिरिक्त खादी ग्रामोद्योग इकाइयाँ आधुनिक तकनीकों का उपयोग नहीं करती हैं, जिससे उनकी उत्पादकता और दक्षता कम होती है। जनपद में खादी ग्रामोद्योग उत्पादों के लिए पर्याप्त बाजार भी नहीं है और खादी ग्रामोद्योग उत्पादों को विदेशी और अन्य उद्योगों के उत्पादों से प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ता है। जनपद में ग्रामोद्योग उत्पादों के विकास के लिए आवश्यक है कि सरकार खादी ग्रामोद्योग इकाइयों को बढ़ावा देने के लिए अधिक प्रभावी नीतियों और योजनाओं को लागू करें। सरकार द्वारा खादी ग्रामोद्योग इकाइयों को आधुनिक तकनीकों का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त खादी ग्रामोद्योग उत्पादों के लिए नए बाजार विकसित करने के लिए कार्यक्रमों को लागू किया जाना चाहिए, साथ ही सरकार द्वारा खादी ग्रामोद्योग इकाइयों को प्रतिस्पर्धी बने रहने के लिए सहायता प्रदान की जानी चाहिए।

संदर्भ:

- Bagchi, A. K. (1975). Some characteristics of industrial growth in India. Economic and Political Weekly, 157-164.
- Garg, A., Shukla, P. A., & Kapshe, M. (2006). The sectoral trends of multigas emissions inventory of India. Atmospheric Environment, 40(24), 4608-4620.
- Geng, Y., Wei, Y. M., Fischedick, M., Chiu, A., Chen, B., & Yan, J. (2016). Recent trend of industrial emissions in developing countries. Applied Energy, 166, 187-190.
- Goldar, B. (1983). Productivity trends in Indian manufacturing industry: 1951-1978. Indian Economic Review, 18(1), 73-99.
- Mohideen, K. R., & Muthuraju, P. (2016). An analysis of trend and growth rate of textile industry in india. Shanlax International Journal of Commerce, 4(3).
- Nayyar, D. (1978). Industrial development in India: some reflections on growth and stagnation. Economic and Political Weekly, 1265-1278.
- Phillips, M. W. A. (2020). Agrochemical industry development, trends in R&D and the impact of regulation. Pest management science, 76(10), 3348-3356.
- Raichurkar, P., & Ramachandran, M. (2015). Recent trends and developments in textile industry in India. International Journal on Textile Engineering & Processes, 1(4), 47-50.
- Subrahmanian, K. K., & Azeez, E. A. (2000). Industrial growth in Kerala: Trends and explanations.
- Tandon, N., & Reddy, E. E. (1990). A study on emerging trends in textile industry in India. Ratio, 104(108), 212.
- Unni, J., Lalitha, N., & Rani, U. (2001). Economic reforms and productivity trends in Indian manufacturing. Economic and Political Weekly, 3914-3922.